

विचार बिन्दु

कर्म वह आईना है जो हमारा स्वरुप हमें दिखा देता है। इसलिए हमें कर्म का एहसानमंद होना चाहिए। –विनोबा

सामाजिक संबंध और प्रसन्नता

सामाजिक संबंध और प्रसन्नता के बीच की कड़ी पर बहुत शोध है: खुश लोग दूसरों के साथ अधिक समय बिताते हैं, साथ ही, लोग सामाजिक रूप से जुड़े व व्यस्त लोग अधिक खुशी का अनुभव करते हैं। लेकिन, लोगों के सामाजिक संपर्क की कुल मात्रा के अलावा किस प्रकार के लोगों के साथ रिश्ते हैं (परिवार के सदस्य, करीबी दोस्त, परिचित, अजनबी), और इनमें से प्रत्येक प्रकार के रिश्तों के साथ कितनी बातचीत या समय बिताया जाए? इन सब पर अभी तक कोई स्पष्ट और ठोस जानकारी उपलब्ध नहीं थी। अब हुई शोध यह सिद्ध करती है कि कल्याण (खुशी, प्रसन्नता, वेल-बीइंग) के लिए गतिविधियों, अनुभवों और भावनाओं में विविधता होना उपयोगी है। लगभग 50,000 से अधिक लोगों के सामाजिक पोर्टफोलियो और कल्याण के मध्य संबंध अर्थात् सामाजिक बातचीत और खुशी का आकलन करने से पता चलता है कि संबंधों की विविधता जितने अधिक प्रकार के लोगों के साथ होगी कल्याण का स्तर उतना ही बेहतर रहता है (देखें एच.के. कॉलिंस इत्यादि प्रोसीडिंग्सऑफ द नेशनल अकेडमीऑफसाइंसेज यूनाइटेड स्टेट्सऑफ अमेरिका, 119 (43) ई2120668119, 2022)।

दिन में औसतन बातचीत का कौन सा पोर्टफोलियो सबसे अधिक मन प्रसन्न करता है? दो-चार करीबी दोस्तों के साथ बातचीत करना, या एक खास करीबी दोस्त, परिवार के एक सदस्य या सहकर्मी के साथ बातचीत करना? सामाजिक संपर्क की तलाश, संबंध, और मानवीय जुड़ाव,अपनेपन और साझा वास्तविकता की भावना का अनुभव करने की जन्मजात मानवीय आवश्यकता पर बड़ी शोध हो चुकी है। दरअसल, किसी व्यक्ति के दैनिक जीवन में सामाजिक संपर्क की मात्रामनोवैज्ञानिक कल्याण केसबसे सुसंगत कारणाें में से एक है।सामाजिक संबंध और भलाई के बीच की कड़ी अच्छी तरह से ज्ञात है: एक पक्की विशेषता यह देखी गई है कि खुश लोग दूसरों के साथ अधिक समय बिताते पाए गए हैं। सामाजिक रूप से व्यस्त और लोगों के साथ निकटता की गहराई वाले लोग भी प्राय: उच्चस्तर का आनंद और प्रसन्नता प्राप्त करते हैं।

यह समझने के लिए हुई शोध कि विभिन्न प्रकार के साथियों में से किसके साथ सबसे अधिक आनंद और प्रसन्नता मिलती है, से पता चलता है कि सामाजिक तंत्र का दायरा जिसमें विविध प्रकार के साथी होते हैं, सकारात्मक परिणाम से जुड़े होते हैं। अच्छी मित्रता मृत्यु दर के जोखिम में कमी लाती है, व्यक्तिपरक भलाई में बेहتری होती है और बेहतर सामाजिक सीख मिलती है। लेकिन नेटवर्क का दायरा सिर्फ विभिन्न संबंध प्रकारों के अस्तित्व या अनुपस्थिति को तो समझ पाता है, परन्तु उन संबंध श्रेणियों में इंटरैक्शन की सापेक्ष आवृत्ति को नहीं समझ पाता। उदाहरण के लिए,भाई-बहन का होना एक बात है परन्तु सिर्फ होना ही पर्याप्त नहीं है बल्कि भाई-बहन के साथ बातचीत और मेल-जोल की आवृत्ति भी मायने रखती है।

शोध अब यह बिलकुल स्पष्ट कर चुकी है कि किसी के सामाजिक संबंधों में विविध प्रकार के संबंध होना भलाई, प्रसन्नता और कल्याण के लिए फायदाप्रद है। इसमें विभिन्न प्रकार के रिश्ते और उनके बीच परस्पर मेल-जोल क्रियाओं का समान वितरण भी शामिल है। शोध से पता चला है कि गतिविधियों, अनुभवों और भावनाओं की विविधता होने से बेहतर कल्याण, प्रसन्नता और भलाई प्राप्त होती है। और इस विविधता में भी अधिक नियमित और गहरा सामाजिक संपर्क अधिक प्रसन्नता देने वाला व कल्याणकारी होता है (जे. सन इत्यादि, जर्नलऑफसोसिअलिटी एंड सोशलसाइकोलॉजी, 119(6): 1478-1496, 2020)।

अब मूल प्रश्न यह रहता है कि कैसे लोगों के साथ मित्रता अधिक आनंददायक होती है। इस विषय पर शोध कम है किंतु आयुर्वेद की संहिताओं में बड़ा रोचक सन्देश मिलता है। सामाजिक विविधता बढ़ाने के साथ यह ध्यान रखना चाहिए कि गलत लोगों के साथ मित्रता नहीं की जाए (च.सू.7.56-57): पापवृत्तवचःसत्त्वाःसूचकाःकलहप्रियाः। मर्मोपहासिनोलुब्धाःपरवृद्धिभिःशटाः॥ परास्वादतयक्षप्लारिपुसंविनः। निष्ठुणास्त्यक्वधर्मागःपरिवृज्यान्तधमाः॥मनू, बातचीत और अपने कार्यों से गलत रास्ते में धकेलने वाले, चुगलखोर, झगड़ालू, मर्मप्रहारक उपहास करने वाले, लालची, दूसरे की उन्नति से जलने वाले, घृते, दूसरे की निंदा में आनंद लेने वाले, चाल, दुश्मनों का साथ देने वाले, निर्दयी, और अपने नियत कार्यों को छोड़ने वाले लोगों के साथ दोस्ती नहीं करना चाहिये। ऐसे लोग आपका जीवन बर्बाद कर सकते हैं। तब कैसे लोगों से मेलजोल बढ़ाए? मित्रता उन्ही लोगों के साथ करें जो आपकी सामाजिक पूंजी को बढ़ाने में सक्षम हैं (च.सू.7.58-59): बृद्धिविद्यावयःशीलधैर्यस्मृतिस्मार्थमधिभिः। वृद्धोपसेविनोवृद्धाःस्वभावज्ञागतव्यथाः॥ सुमुख्याःसर्वभूतानांप्रशान्ताःशंसितव्रताः। सेव्याःसम्प्राणवक्ताःपुण्यश्रवणदर्शनाः॥ बुद्धि, विद्या, आयु, शील, धैर्य, स्मरणशक्ति और स्मार्थि (असंभव या असाध्य कार्य करने के लिये कठिनाइयों में भी धैर्य के साथ लगे रहना) में कुशल, बड़ों की सेवा करने वाले, लोगों के स्वभाव को समझने की क्षमता रखने वाले, शारीरिक एवं मानसिक व्यथा से मुक्त, प्रसन्न मुख वाले, सबको शांत करने वाले, कठना मानने वाले, सही रास्ते में चलने को सलाह देने वाले, सुनने और देखना में कल्याणकारी लोगों का साथ करना ही उचित है।

परिवार में पत्नी, पति, पिता, माता, भाई, बहन, पुत्र, पुत्री होने और कार्य में कर्मचारी-अधिकारी या स्वयं मालिक होने के कत्तर्व्य का सफल और सम्यक निर्वाह प्रसन्नता देता है। इसी प्रकार समाज के प्रति कत्तर्व्य निर्वाह में सामाजिक सद्वृत्तों का पालन प्रसन्नता देता है। कर्तव्य-विमुख व्यक्ति प्रसन्न नहीं रह सकता।

से वैध या नियत कर्तव्यों के पालन को हर्ष का निमित्त कहा गया है। व्यक्ति के स्वयं के प्रति, परिवार के प्रति, परिवार में विभिन्न रिश्तों के प्रति और समाज और देश के प्रति कुछ कर्तव्य निर्धारित होते हैं। इन सबका यथार्थ-बोध होना, और तदनुसार आत्म-नियंत्रित रहकर पत्नी-पति मिथाना प्रसन्नता देता है। व्यक्ति का अपने शरीर को स्वस्थ और प्राणवान रखने हेतु निहित कर्तव्यों का निर्वाह प्रसन्नता देता है। परिवार में पत्नी, पति, पिता, माता, भाई, बहन, पुत्र, पुत्री होने और कार्य में कर्मचारी-अधिकारी या स्वयं मालिक होने के कत्तर्व्य का सफल और सम्यक निर्वाह प्रसन्नता देता है। इसी प्रकार समाज के प्रति कत्तर्व्य निर्वाह में सामाजिक सद्वृत्तों का पालन प्रसन्नता देता है। कर्तव्य-विमुख व्यक्ति प्रसन्न नहीं रह सकता। विश्व की सर्वाधिक महत्वपूर्ण जन्तुसं में 1998 से 2023 के बीच प्रकाशित 88 शोधपत्र भी यही सिद्ध करते हैं कि प्रसन्नता देने वाले कारकों में दूसरों के प्रति सद्भावनापूर्ण कर्तव्यनिर्वहन, उन्हें समय देना, उनकी मदद में धन खर्च करना और समाजोपयोगी कार्य करना जिसे शोध में प्रोसोशियालिटी शब्द द्वारा स्पष्ट किया गया है, प्रसन्नता देने वाला महत्वपूर्ण कारक है। दीर्घकालीन खुशी सिर्फ विश्व के साथ सार्थक संबंध में निहित है। यहाँ सार्थक का मतलब स्वार्थ नहीं है (उदाहरण के लिये देखें, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एनवायरमेंटल रिसर्च एंड पब्लिक हेल्थ, 17: 1-12, 2020; साईंस, 319:1687-1688, 2008; जर्नल ऑफ एपेनीस स्टडीज, 13:347-355, 2012; कंटेम्प्लरेक्शन्स इन साइकोलॉजिकल साईंस, 23:41-47, 2014)। इस रणनीति में बढ़िया शारीरिक-मानसिक स्वास्थ्य, लोगों का कल्याण, लचीलापन, जीवन का सार्थक उद्देश्य, जीवन में स्वास्थ्य संबंधी गुणवत्ता और सामाजिक भागीदारी जैसे कारक समाहित हो जाते हैं जिन्हें शोध में प्रसन्नता के लिये उपयोगी पाया गया है।

जिन लोगों के साथ मेलजोल अधिक प्रसन्नता देता है, वह जान लेते के बाद अब अंत में यह समझना भी आवश्यक है कि आप उन लोगों के जीवन में बेहतरी लाने के लिए क्या कर सकते हैं ताकि प्रसन्नता पारस्परिक हो? स्वयं के लिये सुखकारी और समाज और मित्रों के लिये हितकारी जीवन जीने की साझा युक्ति ही प्रसन्नता देती है (च.सू.30.24): तत्रशरीरमानसाभ्यारोगाभ्यामभिधुतस्त्यक्षिणयौनवतः समर्थानुगतबलवीर्यशःपौरुषपराक्रमस्यज्ञानविज्ञानैन्द्रियैन्द्रियाथर्बलसमुदयवर्तमानस्यपरमर्द्धिरुचिरविधोषप ापस्यसमुद्रसर्वारम्भस्यस्थथैवविचारिणःसुखमाप्सुरुच्यते;असुखयतोविपर्ययेण;हितैषिणःपुनर्भूतानांपरस्वादुपरस्वयसत्यवादिनःशमपरस्पराप्रीक्ष्यकारिणोऽप्रमत्तस्यत्रिवर्गपरस्परानुपहतमुपसेवनमानस्यपूजार्हसमुच्चकस्यज्ञानविह्ानोपशमशीलस्यवृद्धोपसेविनःसुनिवहारागोप्यमदमानवेत्यसत्तर्विविधप्रदानपरस्परापेक्षाप्रशमनित्यव्याधयात्वविदस्तपस्स्यलोकार्थमचामुपवेक्षमाणस्यस्मृतिमतिमतीहितमाप्सुरुच्यते; अहितमतोविपर्ययेण॥ शारीरिक और मानसिक रोगों से पूरी तरह मुक्त, विशेष रूप से युवावस्था, हर कार्य करने का सामर्थ्य और उसके अनुरूप बल, यश, पराक्रम, ज्ञान, कोशल, सद्दियों और सद्दियों के विषयों के बल के समुदाय से युक्त, उत्तम धन-सम्पदा एवं विविध प्रकार के उपभोग में सक्षम, जो कार्य प्रारम्भ किये थे सभी कार्य पूर्ण हो गये हों और स्वयं की इच्छा अनुसार चलने-फिरने वाले व्यक्ति का जीवन सुखी जीवन होता है। इसके उलट दुःखी जीवन होता है। समकालीन शोध के अनुसार भी बढ़िया स्वास्थ्य, उत्तम शारीरिक-मानसिक सामर्थ्य, नियमित व्यायाम, प्राकृतिक स्थलों और बाग-बगीचों में घूमना-फिरना, उत्तम मित्रों और परिवार के साथ समय बिताना, शिक्षा, कोशल, धन-संपत्ति अर्जित करना, कार्यों में सफलता तथा इच्छा अनुसार आने-जाने के लिये समय, सामर्थ्य और स्वतंत्रता बड़ी प्रसन्नता देते हैं। (देखें, प्रोसीडिंग्स ऑफ द नेशनल अकेडमी ऑफ साइंसेज ऑफ यूएसए, 100:11176-11183, 2003; 107:2463-22468, 2010; 114:8523-8527, 2017; 116:1207-1212, 2019; 117:6463-6468, 2020)।

अपना कल्याण सुनिश्चित करते हुये, सभी प्राणियों के हितचिंतक, दूसरे का धन छीनने से बचने वाले, सत्य बोलने वाले, शांतिप्रिय, कार्यों को सोच विचार कर करने वाले, सावधान, अर्थ, धर्म, काम का सम्यक सेवन करने वाले, श्रेष्ठ व्यक्तियों का सम्मान करने वाले, ज्ञानशील, विज्ञानशील, शांतिशील, बड़े-बूढ़ों की सेवा करने वाले, राग, क्रोध, ईर्ष्या, मद, मान के वेगों पर उच्चकोटि का नियंत्रण रखने वाले, निरंतर दानशील, नित्य आत्म-नियंत्रित, ज्ञान, शांति, विनम्रता, आध्यात्म के जानकार और प्रयोग में लेने वाले, लोक-परलोक का विचार करने वाले, स्मरण-शक्ति और बुद्धि से युक्त व्यक्ति की आयु हितायु कही जाती है। समकालीन शोध में प्रोसोशियालिटी के विविध आयाम यही हैं। सुखायु स्वयं के लिये है और हितायु समाज के लिये है। शोध में यह स्पष्ट स्पष्ट होती है (उदाहरण के लिये देखें, मनुअल रिव्यू ऑफ पब्लिक हेल्थ, 40:339-359, 2019)।

उत्तम मित्रों का साथ ठीक है लेकिन आयुर्वेद यह भी चेतावनी देता है कि अकेले खुश मत होइये, हितायु का ध्यान रखते हुये प्रसन्नता साझा कीजिये (च.सू.8.26) नैकः सुखी अकेले सुखी न हों, सुख को समाज के साथ बांटिये। दीर्घकालिक अध्ययन स्पष्ट करते हैं कि हमारी खुशी उन सबकी खुशी पर निर्भर करती है जिनके साथ हम जुड़े हुये हैं (देखें, ब्रिटिश मेडिकल जर्नल, 338:23-26, 2009)।

निष्कर्ष रूप में, लोगों का समय कीमती और सीमित है, जिससे उनके जीवन में अधिक सामाजिक संपर्क जोड़ना मुश्किल हो जाता है। शोध के निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि एक विविध सामाजिक पोर्टफोलियो रहने से किसी का बहुत अधिक समय न लेते हुए भी भलाई में सुधार करने का एक प्रभावी तरीका मिलता है। विभिन्न प्रकार के लोगों के साथ मेल-जोल बनाकर, व्यक्ति अपने समय का कुशलतापूर्वक प्रबंधन करते हुए भी सामाजिक समर्थन का लाभ उठा सकते हैं। ऐसा करने के लिए हमें अपने नियत कर्तव्यों का पालन और अपने जीवन को समर्थ और लोगों के लिए कल्याणकारी बनाना ही आवश्यक है।

—**अतिथि सम्पादक,**
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फॉरेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

देश की स्वतंत्रता में जैन धर्म एवं जैन धर्मावलम्बियों का योगदान



भागचंद जैन मित्रपुरा

“दे दी हमें आजादी बिना खड़ग बिना ढाल, साबरमती के संत तूने कर दिया कमाल।”

यह सर्व विदित है कि 76 वर्ष पूर्व देश को स्वतंत्रता जैन धर्म के अहिंसा व सत्य के सिद्धांत की पालना करने से ही प्राप्त हुई है। गांधीजी पर अहिंसा का प्रभाव बचपन से पड़ गया था। बचपन में ही उनके अंदर जैन संस्कार थे। उनकी माता सूर्यास्त से पूर्व भोजन करती थी। गांधी जी को पढ़ाई के लिए विदेश भेजना था। उनके माता-पिता ने जैन गुरु से पूछा तब जैन गुरु ने उन्हें वहां जाकर नशा, अंडा, मीठ व पराई स्त्री से दूर रहने का नियम दिलाया। विदेश में उन्हें लोगों द्वारा काफी भटकाने की कोशिश करने के उपरांत भी वे अपने नियम पर अड़े रहे। उन्हें विदेश में धर्म परिवर्तन करने के लिए भी कहा गया। फिर महात्मा गांधी ने जैन भाई राय चंद जिन्हें जैन धर्म के सिद्धांतों की गहन जानकारी थी, उन्हें समाधान के लिए 50-60 प्रश्न भेजकर उनका उत्तर जानना चाहा। गांधी जी के, उनके उत्तर से, सभी संदेह दूर हो गए तथा धर्म परिवर्तन नहीं किया। गांधी जी जन्म से नहीं कर्म से जैन थे। अंततोगत्वा महात्मा गांधी के अहिंसात्मक आंदोलन के कारण ही अंग्रेजों को भारत छोड़ना पड़ा और स्वतंत्रता की प्राप्ति हुई। अहिंसा के बल पर ही वह आज राष्ट्र पिता के नाम से जाने जाते हैं।

भारत के स्वतंत्रता संग्राम मे देश के सभी धर्मावलंबियों ने जेल की यातनाएँ सहकर एवं बलिदान देकर भारत को स्वतंत्रता दिलाने में सहयोग दिया। जैन धर्मावलंबी भी देश की

स्वतंत्रता संग्राम में अग्रणी रहे है। जैन धर्मावलंबियों ने भी स्वतंत्रता के इस महायज्ञ में अपना सर्वस्व समर्पण किया है एवम लगभग 20 जैन शहीदों ने अपने प्राणों का बलिदान दिया। ग्वालियर नरेश के खजांची अमर शहाद अमरचंद जी बाँठिया ने खजाना खोलकर स्वतंत्रता के प्रहरियों की सहायता की। बहादुरशाह जफर के दोस्त लाला हुकमचंद जैन व उनके भतीजे फकीरचंद जैन को जेल के मकान के आगे फाँसी पर लटका दिया। इसी तरह मोतीचंद शाह, उदयचंद जैन, साबूलाल जैन, अर्जुनलाल सेठी जैसे अनेक क्रांतिकारी सेनानियों के कारनामों से इतिहास भरा पड़ा है। डॉ. कपूरचंद जैन एवं डॉ. श्रीमती ज्योति जैन ने इस संबंध में खोजबीन की है और उन्होंने भरसक प्रयत्न किया है उन जैन वीरों को खोजने का जिन्होंने स्वतन्त्रता संग्राम में अपनी आहुति दी है। स्वतंत्रता सेनानी पंजाब केसरी लाला लाजपतराय की दादी जैन धर्मावलंबी थी और वह किसी साधु को भोजन कराये बिना स्वयं भोजन नहीं करती थी। जैन पत्रकारिता के पितामह बाबू ज्योतिप्रसाद जैन द्वारा ‘जैन प्रदीप’ में 1930 में ‘भगवान महावीर और गांधीजी’ नामक उर्दू में छपे लेख से अंग्रेज इतना डर गये थे कि उन्होंने इस समाचार पत्र की सारी प्रतियाँ ही जब्त कर ली थी और इसके प्रकाशन पर रोक लगा दी गई थी। प्रसिद्ध साहित्यकार कल्याण कुमार ‘शशि’ तथा श्यामलाल पाण्डवीय की पुस्तक और पत्रिका भी जब्त कर ली गई थी। इस तरह अनेक जैन पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से जैन स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने आजादी के यज्ञ में तन-मन-धन, साहित्य तथा क्रांतिकारी विचारों से समर्पण भाव से सहयोग दिया।

पं. बंशीधरजी व्याकरणचार्य, पं. फूलचंद जी सिद्धांत शास्त्री, पं. खुशालचंदजी गोपालाा जैसे प्रसिद्ध विद्वानों ने भी जेल की कठिन यातनाएँ सहन की थी। लगभग 5 हजार से भी अधिक जैन धर्मावलंबी जेल गये और सैकड़ों जैनियों ने जेल से बाहर रहकर तन-मन-धन से बढ-चढकर यथा संभव सहयोग दिया। स्वतंत्रता सेनानी

में रहकर स्वतंत्रता संग्राम के दौरान जैन संस्कारों का स्वयं पालन किया करते थे। खजुराहो के निकट गाँव में पैदा हुए शहीद छोटेलालजी जैन के साथ जब जेल में खाने पीने की जबरदस्ती की गई तो उन्होंने अनशन करते हुए अपना दृढ़ निश्चय का सिंहनाद किया कि जब तक छना पानी और शुद्ध भोजन नहीं मिलेगा तब तक एक बूँद भी अन्न-जल ग्रहण नहीं करूँगा। अंततः शासन को झुकना पड़ा। जबलपुर के पनागर में जन्मे सिंघई जवाहरलाल जैन का वाक्या भी कुछ ऐसा ही है। दश लक्ष्ण पर्व में वे अपने 40-50 जैन साथियों सहित जेल में थे, उन्होंने जेल में इस बात को लेकर सत्याग्रह किया कि पर्व के दिनों में अपने हाथ से बना शुद्ध भोजन ही ग्रहण करेंगे, जिसमें उन्हें सफलता प्राप्त हुई और दसों दिन पर्व में पूजन भजन के साथ सात्विक भोजन भी किया।

पन्ना दमोह क्षेत्र से सांसद रहे प्रसिद्ध सामाजिक राजनीतिक पदों को सुशोभित करने वाले श्री डालचंद जैन ने स्वतंत्रता आंदोलन में शरीक उन सभी जैन सेनानियों की जेल में शुद्ध भोजनादि की व्यवस्था की। आचार्य नेमिसागर महाराज ने भी गृहस्थ अवस्था में स्वाधीनता आंदोलन में सक्रिय सहयोग दिया था। ग्यारह माह तक लाहौर जेल में रहे, जेल की अशुद्ध रोटी नहीं खाई। कई दिनों तक उपवास किया। अंत में शुद्ध भोजन की व्यवस्था हुई। इसी तरह शुल्लक पदमसागर जी महाराज ने भी गृहस्थ अवस्था में स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय सहयोग दिया। उन्हें बड़ीदा में 144 धारा तोड़ने के कारण जेल जाना पड़ा। जैन समाज के प्रख्यात विद्वान पं. परमेष्ठीदास जी भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रहते हुए जेल गये।

20वीं सदी के अग्रगण्य जैन विद्वानों में पं. फूलचंद जी शास्त्री का नाम आदर से लिया जाता है। वे भी ललितपुर में गिरफ्तार हुए और जेल गये। वे विदेशी वस्त्र एवं सामग्रियों का उग्रतापूर्वक बहिष्कार करते थे स्वयं देशी वस्त्र पहनते थे। जैन दर्शन के उद्भट विद्वान पं.बंशीधर जी व्याकरणाचार्य भी इस मातृभूमि को स्वतंत्रता दिलाने में पीछे नहीं रहे। पद्य श्री बाबूलाल जी पाटोदी

खिलाड़ियों को ट्रैक्टर-ट्राली और लोडिंग पिकअप से खेल मैदान पर लाया जा रहा है

माण्डलगढ़ के राजकीय महाराणा उच्च माध्यमिक विद्याल के खेल मैदान पर ग्रामीण ओलम्पिक खेल कूद प्रतियोगिता चल रही हैं



राजीव गांधी ग्रामीणा ओलम्पिक खेल में खिलाड़ियों की जान जोखिम में डाल कर ट्रैक्टर ट्रालियों, लोडिंग पिकअप से लाया जा रहा है।

माण्डलगढ़ के राजकीय महाराणा उच्च माध्यमिक विद्यालय के खेल मैदान पर पंचायत समिति माण्डलगढ़ द्वारा ब्लॉक स्तरीय ग्रामीण ओलम्पिक खेल कूद प्रतियोगिता चल रही है। इस प्रतियोगिता में क्षेत्र की ग्राम पंचायतों से माण्डलगढ़ के खेल मैदान तक लाने ले जाने की जिम्मेदारी ग्राम विकास

अधिकारियों दी गई है। लेकिन ग्राम विकास अधिकारी सस्ता किराया या फ्री के लालच में मोटर व्हीकल एक्ट की अनदेखी कर खिलाड़ियों को ट्रैक्टर ट्रालियों, लोडिंग पिकअप गाड़ी में भरकर ला रहे हैं और वापस भी इन्ही वाहनों से ले जाया जा रहा है। जबकि मोटर व्हीकल एक्ट के तहत

माण्डलगढ़ के राजकीय महाराणा उच्च माध्यमिक विद्यालय के खेल मैदान पर पंचायत समिति माण्डलगढ़ द्वारा ब्लॉक स्तरीय ग्रामीण ओलम्पिक खेल कूद प्रतियोगिता चल रही है। इस प्रतियोगिता में क्षेत्र की ग्राम पंचायतों से माण्डलगढ़ के खेल मैदान तक लाने ले जाने की जिम्मेदारी ग्राम विकास

अधिकारियों दी गई है। लेकिन ग्राम विकास अधिकारी सस्ता किराया या फ्री के लालच में मोटर व्हीकल एक्ट की अनदेखी कर खिलाड़ियों को ट्रैक्टर ट्रालियों, लोडिंग पिकअप गाड़ी में भरकर ला रहे हैं और वापस भी इन्ही वाहनों से ले जाया जा रहा है। जबकि मोटर व्हीकल एक्ट के तहत

माण्डलगढ़ के राजकीय महाराणा उच्च माध्यमिक विद्यालय के खेल मैदान पर पंचायत समिति माण्डलगढ़ द्वारा ब्लॉक स्तरीय ग्रामीण ओलम्पिक खेल कूद प्रतियोगिता चल रही है। इस प्रतियोगिता में क्षेत्र की ग्राम पंचायतों से माण्डलगढ़ के खेल मैदान तक लाने ले जाने की जिम्मेदारी ग्राम विकास

अधिकारियों दी गई है। लेकिन ग्राम विकास अधिकारी सस्ता किराया या फ्री के लालच में मोटर व्हीकल एक्ट की अनदेखी कर खिलाड़ियों को ट्रैक्टर ट्रालियों, लोडिंग पिकअप गाड़ी में भरकर ला रहे हैं और वापस भी इन्ही वाहनों से ले जाया जा रहा है। जबकि मोटर व्हीकल एक्ट के तहत

यह गैर कानूनी परिवहन है। इस दौरान हादसा होने पर कितने ही घरों के चिराग गुल हो सकते है। वहीं यातायात नियमों के तहत हादसे में पीड़ित को कोई भी मुआवजा एवं राहत नहीं मिल सकती है।मामले को लेकर प्रशासन के अधिकारी एवं आयोजक से बात करने पर बचते नजर

आए। वहीं जिला शिक्षा अधिकारी के निर्देश है कि ग्रामीण खिलाड़ियों को यात्री वाहन में ही खेल मैदान तक लाया और ले जाया जाएगा। दूसरी ओर खेल मैदान पर आवारा सांड के विचरण को लेकर खिलाड़ियों की सुरक्षा के कोई पुख्ता व्यवस्था नजर नहीं आई है।

आप! वहीं जिला शिक्षा अधिकारी के निर्देश है कि ग्रामीण खिलाड़ियों को यात्री वाहन में ही खेल मैदान तक लाया और ले जाया जाएगा। दूसरी ओर खेल मैदान पर आवारा सांड के विचरण को लेकर खिलाड़ियों की सुरक्षा के कोई पुख्ता व्यवस्था नजर नहीं आई है।

यह गैर कानूनी परिवहन है। इस दौरान हादसा होने पर कितने ही घरों के चिराग गुल हो सकते है। वहीं यातायात नियमों के तहत हादसे में पीड़ित को कोई भी मुआवजा एवं राहत नहीं मिल सकती है।मामले को लेकर प्रशासन के अधिकारी एवं आयोजक से बात करने पर बचते नजर

आप! वहीं जिला शिक्षा अधिकारी के निर्देश है कि ग्रामीण खिलाड़ियों को यात्री वाहन में ही खेल मैदान तक लाया और ले जाया जाएगा। दूसरी ओर खेल मैदान पर आवारा सांड के विचरण को लेकर खिलाड़ियों की सुरक्षा के कोई पुख्ता व्यवस्था नजर नहीं आई है।

माण्डलगढ़ के राजकीय महाराणा उच्च माध्यमिक विद्यालय के खेल मैदान पर पंचायत समिति माण्डलगढ़ द्वारा ब्लॉक स्तरीय ग्रामीण ओलम्पिक खेल कूद प्रतियोगिता चल रही है। इस प्रतियोगिता में क्षेत्र की ग्राम पंचायतों से माण्डलगढ़ के खेल मैदान तक लाने ले जाने की जिम्मेदारी ग्राम विकास

समाज के सम्मानित और प्रतिभावान नेता तो रहे ही हैं, स्वतन्त्रता आंदोलन में 1939 से ही सक्रिय हो गये थे और अपने जीवन में अनेक बार जेल की दारुण यातनाएँ सहनी पड़ीं।

इन्दौर के तत्कालीन भग्यभारत के मुख्यमंत्री रहे मालवा के गांधी के नाम से प्रसिद्ध श्री मिश्री लाल जी गंगवाल भैय्याजी ने अनेक आंदोलनों में हिस्सा लिया तथा जेल यात्राएँ भी की। वे आध्यात्मिक भजनों के विनोदी थे। धार्मिक सभाओं के अलावा राजनीतिक सभाओं में भी अपने भजनों से सुनने वालों को मंत्रमुग्ध कर देते थे। उनके जीवन की घटनाओं के अनुसार वे कट्टर शाकाहारी थे। इस नियम का राजनीतिक उच्च पद पर रहकर भी कितनी दृढ़ता से पालन करते थे, वह स्तुत्य एवं अनुकरणीय है।

जैन धर्म के सिद्धांत कितने महान हैं, इसका प्रमाण यह है कि भारतवर्ष के संविधान में जैन धर्म के मूलभूत अहिंसा धर्म के सिद्धांत जीव मात्र के प्रति दया भाव को संविधान में शामिल कर इसे नागरिकों के मूल कर्तव्य के रूप में प्रतिपादित किया गया है, तथा भारत वर्ष का संविधान बनाने वाली संविधान निर्माता समिति में 5 जैन धर्मावलंबियों को शामिल किया गया था। जिनमें श्री रत्नलाल जी जैन मालवीय, अजितप्रसाद जी जैन, भवानी अर्जुन खीमजी, बलवंतसिंह मेहता और कुसुमकांत जी जैन शामिल थे। कह सकते हैं कि अहिंसा भी एक धारदार हथियार है जो किसी को शरीर से नहीं मन से मारता है। मन से मारने में सामने वाले को अपनी बुराई छोड़ने में खुशी का अनुभव होता है, उसकी आत्मा परम पवित्र बन जाती है। चारो ओर निर्भय का वातावरण बन जाता है, स्वतंत्रता का अनुभव होता है। जैन धर्म के सिद्धांत शाश्वत सत्य है, पुराने जमाने से लेकर आज तक इनमे कोई परिवर्तन नहीं हुआ है। विश्व शांति जैन धर्म के सिद्धांत अपना कर ही प्राप्त की जा सकती है।

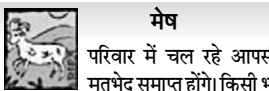
साभार ‘सम्प्रतिवाणी’ संकलन : भागचंद जैन मित्रपुरा, अष्टाक्ष अखिल भारतीय जैन बैंकर्स फोरम, जयपुर।

—**अतिथि सम्पादक,**

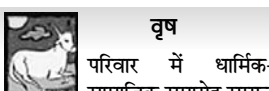
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय

(इंडियन फॉरेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)

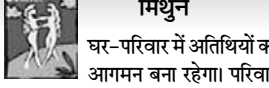
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)



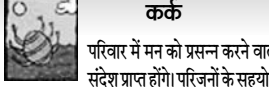
मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। किसी भी कारण से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।



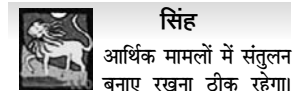
वृष
परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। अनावश्यक धन खर्च होगा।



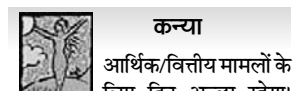
मिथुन
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में शुभ-धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। आपसी वाद-विवाद से राहत मिलेगी।



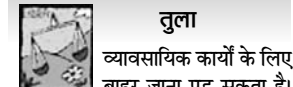
कर्क
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिवर्जनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।



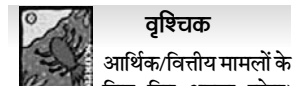
सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। मनोरंजन पर धन खर्च हो सकता है। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।



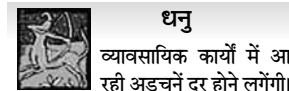
कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। संपादित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है।



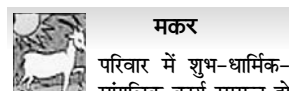
तुला
व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनगल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा।



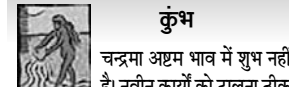
वृश्चिक
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में सार्थक सफलता मिलेगी।



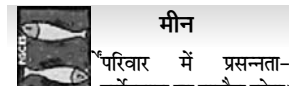
धनु
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्यों शीघ्रता,सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।



मकर
परिवार में शुभ-धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए बाहर जाने का कार्यक्रम बन सकता है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।



कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ तक रहेगा। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। व्यावसायिक परेशानियों अभी यथावत बनी रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा।



मीन
परिवार में प्रसन्नता-हर्षोल्लास का माहौल रहेगा। परिवार में शुभ-धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।